08 जनवरी 2021 के लिए विशेषः

धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा के आदर्श वाक्य के साथ राजस्थान विश्वविद्यालय 75वें वर्ष में

स्वतंत्रता पूर्व जयपुर रियासत के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल व उनके उत्तराधिकारी वी.टी. कृष्णमाचार्य द्वारा किए गए गंभीर प्रयासों व लम्बे विचार विमर्श के बाद 08 जनवरी 1947 को राजपूताना विश्वविद्यालय जिसे बाद मे राजस्थान विश्वविद्यालय का नाम दिया गया, की स्थापना की गई। अपने स्थापना वर्ष के बाद धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा जैसे आदर्शपूर्ण वाक्य के साथ यह विश्वविद्यालय 08 जनवरी 2021 को अपने 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जयपुर के तत्कालीन महाराजा सवाई मानसिंह द्वारा राज्य के इस सबसे पहले एवं बडे उच्च शिक्षण संस्थान के लिए सर्वप्रथम मोती डूंगरी किले से लगती 300 एकड भूमि उदारता के साथ प्रदान की गयी। साथ ही महाराजा एवं महारानी कॉलेज के लिए भी अतिरिक्त भूमि जयपुर की पूर्व रियासत द्वारा प्रदान की गई। इसी दौरान इसका अस्थायी कार्यालय जयपुर के केसरगढ किले में स्थापित किया गया। विश्वविद्यालय का संस्थापक कुलपति कौन हो, इसके बारे में संस्थापक रियासतों जयपुर, बीकानेर, उदयपुर, अलवर व जोधपुर के प्रतिनिधियों ने देश भर के विद्वानो के नामो पर गहन विचार विमर्श किया और अंतिम निर्णय के रूप में देश के महान गणितज्ञ पूना के फर्ग्यूसन कॉलेज के प्राचार्य डॉ. जी.एस. महाजनी को इस दायित्व के लिए जयपुर के महाराजा मानसिंह द्वारा व्यक्तिगत रूप से आग्रह किया गया व जयपुर के सिटी पैलेस में उन्हे विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद इस विश्वविद्यालय से जुडे शिक्षाविदों के तपस्वी, समर्पित एवं शोधपूर्ण आचरण ने इस विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक ख्यातिपूर्ण पहचान दिलाई, यहां तक कि जे.एन.यू नई दिल्ली की स्थापना में इस विश्वविद्यालय के शिक्षकों की अहम भूमिका रही। इस विश्वविद्यालय से जुडे शिक्षाविदों को समाज के प्रत्येक वर्ग का विशिष्ट सम्मान मिला, इसे इस रूप में समझा जा सकता है कि वर्ष 1961 में तत्कालीन समय के कुछ विश्वविद्यालय शिक्षक जब राज्यपाल सम्पूर्णानंद जो कि स्वंय एक शिक्षाविद् थे, से मिलने जब राजभवन पहुंचे तो उन्होने इन शिक्षकों से चर्चा के बाद आदर से उन्हे और कोई सेवा भी बताने के लिए कहा, इसी दौरान मिलने आए शिक्षकों में से एक शिक्षक ने विश्वविद्यालय के भविष्य में विस्तार को दृष्टिगत रखते हुऐ उनसे विश्वविद्यालय के लिए कुछ भूमि आवंटित करने की बात रख दी, राज्यपाल सम्पूर्णानन्द ने तुरंत अधिकारियों को बुलाया और बुलाकर विश्वविद्यालय विस्तार के लिए झालाना डूंगरी से लगती 157 एकड भूमि आवंटित करने के आदेश जारी कर दिए, हालांकि यह भी एक तथ्य है कि सालों बाद यह विश्वविद्यालय को आवंटित भूमि राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज नही हो सकी व इसके बडे भूभाग पर निजी व अन्य संस्थानो ने अपने अनाधिकृत कब्जा भी कर लिये। एक लम्बे समय बाद 2017 में इस विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति हनुमान सिंह भाटी जो

कि जयपुर के संभागीय आयुक्त भी थे, की पहल पर इसके मुख्य परिसर की 207 एकड भूमि राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज किए जाने में सफलता मिली।

तत्कालीन जयपुर रियासत द्वारा भूमि प्रदान करने के उपरान्त तत्कालीन कुलपति प्रो. मोहनसिंह मेहता जैसे शिक्षाविद् ने न केवल इस विश्वविद्यालय के आकर्षक स्वरूप को ही मूर्त रूप दिया वरन् देश के जाने पहचाने शिक्षाविदों को इस विश्वविद्यालय से जोडने की एक लगातार मुहिम चलाई, इसी मुहिम का परिणाम समझा जा सकता है कि इस विश्वविद्यालय से प्रो. सी. रंगनाथन, प्रो. राजा चलैया, प्रो. योगेन्द्र सिंह, जे.एस. भल्ला, बी.एल. सर्राफ, प्रो. दयाकृष्णा, प्रो. पी.एन श्रीवास्तव, सी.पी. भांभरी, प्रो. एस. लोकनाथन, प्रो. सतीश चन्द्रा, प्रो. बी.आर. मेहता जैसे अनेक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों का सान्निध्य मिला। यहां के छात्रों ने भी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान कायम किया। प्रशासनिक क्षेत्र में आदर्श किशोर सक्सैना, अरविंद मायाराम, एन.एस. सिसोदिया, एम.एल. मेहता, व अरविंद पनगडिया जैसे नामों के साथ राजनीति में देश के उपराष्ट्रपति रहे भैंरोंसिंह शेखावत, नवल किशोर शर्मा, जैसे अनेको राजनीतिज्ञ इस विश्वविद्यालय की उपज रहे। आज भी राज्य के अधिकांश राजनीतिक दलों से जुडे वरिष्ठ नेता इस विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं।

जिस समय इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई उसके पीछे कितना पवित्र उद्देश्य उस समय के संस्थापकों का था, उसे इस रूप में समझा जा सकता है कि इस विश्वविद्यालय के स्थापना से जुडे राजपूताना की सहभागी रियासतों ने इस विश्वविद्यालय के लिए 02 लाख 50 हजार का पहला अनुदान तो दिया लेकिन इस अनुदान के साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया था कि इस अनुदान को कतई इस विश्वविद्यालय की स्वायत्ता में किसी भी रूप में दखल करने का तात्पर्य नही समझा जाएगा। विश्वविद्यालय के विद्वान शिक्षकों एवं निर्भिक व साधुत्व व्यक्तित्व के तत्कालीन कुलपतियों के तेज एवं व्यापक प्रभाव के चलते स्थापना के बाद एक लम्बे समय तक राज्य सरकारों ने भी इसकी स्वायत्ता में दखल का विचार भी नही रखा। विश्वविद्यालय पर वर्ष 1996 में आए एक गंभीर वित्तीय संकट के समय राज्य के प्रमुख दैनिक राजस्थान पत्रिका के प्रधान संपादक श्री गुलाब कोठारी को इस संबंध में मेरे द्वारा किए गए आग्रह के आधार पर 50 लाख रू. की सहायता राशि उदारता पूर्वक प्रदान की गई, जिसे बाद में चलकर विश्वविद्यालय ने राजस्थान पत्रिका इण्डोर स्टेडियम की स्थापना करने में उपयोग लिया।

विपरीत समय और परिस्थितियों के बाद भी इस विश्वविद्यालय की शैक्षणिक समृद्धता प्रभावित नही हो सकी। देश के प्रधान मंत्री रहे डॉ. मनमोहन सिंह ने भुवनेश्वर में 91वीं साइंस कांग्रेस में दिए अपने संबोधन में देश के श्रेष्ठ वैज्ञानिक संस्थानो की श्रेणी में राजस्थान विश्वविद्यालय को शोधपत्रों के साइटेशन आधार पर देश के शीर्ष 50 संस्थानो की श्रेणी में रखा। इस विश्वविद्यालय को हाल ही कुछ वर्षों पूर्व देश के श्रेष्ठ 15 विश्वविद्यालय की श्रेणी में चिन्हित करते हुऐ यू.पी.ई (यूनिवर्सिटी विद् पोटेंशियल फॉर

एक्सीलैंस) जैसे प्रतिष्ठित कार्यक्रम के लिए चुना गया। वर्ष 2004 व 2016 में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् जो कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की एक स्वायत्तशाषी संस्था है ने अपने एक उच्च स्तरीय मूल्यांकन के बाद इस विश्वविद्यालय को देश के गिने चुने विश्वविद्यालय की श्रेणी में ए प्लस एवं ए ग्रेड प्रदान की।

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौधोगिकी विभाग ने इस विश्वविद्यालय में हो रहे विज्ञान विषय से जुडे शोध कार्यों एवं अन्य शैक्षणिक कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए इसे देश के सर्वश्रेष्ठ 13 विश्वविद्यालयों में स्थान दिया। इस विश्वविद्यालय ने अब तक लाखों स्नातक व विद्वान शिक्षाविद् समाज को दिए हैं। राज्य ही नही वरन् देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में आज इस विश्वविद्यालय के शिक्षक कुलपति का दायित्व निभा रहे हैं। संघ लोक सेवा आयोग में राज्य सहायता प्राप्त विश्वविद्यालयों की श्रेणी में भारतीय प्रशासनिक सेवा के सर्वाधिक छात्र इस विश्वविद्यालय से दिए जाने का जिक्र भी अपनी वार्षिक रिपोर्ट में किया है।

यह देश का पहला ऐसा विश्वविद्यालय है जिसने अपने छात्रों को बढती दुर्घटनाओं में घायल होने व मृत्यू होने की स्थिति में छात्र दुर्घटना सहायता जैसा देश मे पहली बार अभिनव कार्यक्रम प्रारम्भ किया जिसके तहत अब तक 01 करोड रूपए से अधिक की राशि पीडित छात्रों एवं उनके परिजनो को सहायता के रूप में दी जा चुकी है।

देश में बढती आतंकवादी घटनाओं के प्रभाव को कम करने की दृष्टि से इस विश्वविद्यालय ने जयपुर में सिलसिलेवार बम धमाकों की आतंकवादी घटना में घायल व मृत परिवारों के युवाओं को निशुल्क रूप से उच्च शिक्षा देने की एक अभिनव पहल की। देश भर में चर्चित रही इस पहल का ही परिणाम है कि इस आतंकवादी घटना से जुडे लगभग 40 युवाओं को प्राथमिकता के साथ इस विश्वविद्यालय ने निशुल्क रूप से उच्च शिक्षा प्रदान की है। इसका लाभ वर्तमान में भी पीडित छात्र उठा रहे हैं। छात्र दुर्घटना सहायता योजना व जयपुर बम्ब पीडितों को निशुल्क उच्च शिक्षा दिये जाने की ये दोनो योजनाऐं विश्वविद्यालय जनसंपर्क अधिकारी द्वारा विश्वविद्यालय प्रशासन के समक्ष रखे गये प्रस्तावों के आधार पर लागू की गई।

(डॉ. भूपेन्द्र सिंह शेखावत)
पी.आर.ओ
राजस्थान विश्वविद्यालय
फोन न. 9413343291